इन औरतों के नाम

जुही

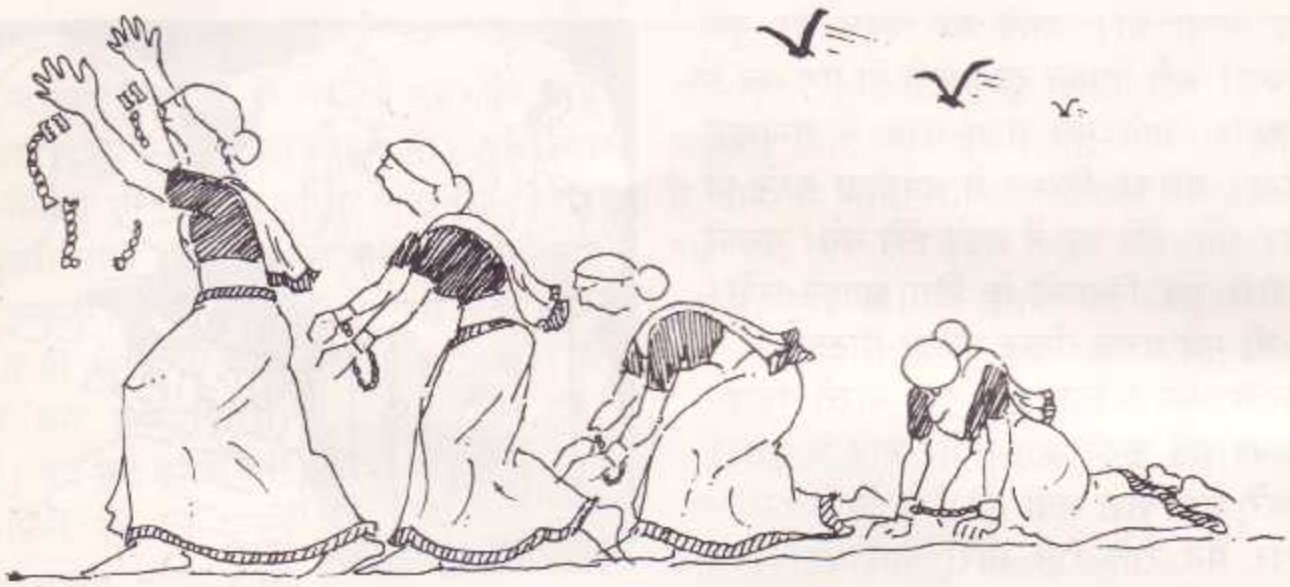

कभी-कभी हम सोचते हैं, दुनिया इक्कीसवीं सदी में पहुंच रही है, पर हम औरतों की हालत में कोई खास फ़र्क नही आया। तो फिर इस काम का फायदा क्या? हम आज भी ग़ैर-बराबरी और अन्यायी पितृसत्ता के ढांचे में जी रहे हैं।

ऐसे समय में हमारी मायूसी दूर करते हैं जगह जगह औरतों के प्रेरणादायक-उत्साही अनुभव। ये औरतें और इनके ये संघर्ष अनदेखे और गुमनाम ही रह जाते हैं। ये अक्सर हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। हमारा हौसला बढ़ाते हैं। कठिनाइयों का सामना करने का साहस देते हैं। आइए आज कुछ ऐसी ही मानुषियों से मिलते हैं। इनकी आपबीती सुनें और एक नए जीवन की खोज की प्रेरणा लें।

रजनी की हिम्मत

रजनी की शादी बंगलौर में हुई। उसका पति वहां किसी रेस्तरां में बेयरा था। ससुराल में विधवा सास और दो देवर थे। शादी के दो सालों में उसको एक बेटी हो गई। समय गुजरता गया। पति उसे बहुत प्यार करता था। सलाह-मश्वरा करके ही कोई काम करता था। सास को यह बर्दाश्त न हुआ। डर लगा कहीं बेटा बहू को लेकर अलग न हो जाए। उसने अपने बेटे को ज़हर दे दिया। रोती पीटती रजनी मायके आ गई। मायके में पिता और भाई ने भरपूर प्यार दिया। रजनी फिर भी सोचती ऐसे कब तक चलेगा। उसने तय किया कि वह अपने पांव पर खड़ी होगी। आठवीं पास तो पहले ही थी। पिता की मदद से उसने दसवीं पास की। फिर सिलाई का डिप्लोमा किया। आज रजनी पंद्रह सौ रुपये कमाती है। एक पब्लिक स्कूल में सिलाई-टीचर है। अपने स्कूल में ही उसने अपनी बेटी

को दाख़िल करा लिया है। उसने अपने सास और देवर पर मुकदमा किया। दोनों को सज़ा हो गई। आज रजनी खुश है, क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी संवार ली है।

शबनम बी ने हक़ पाया

शबनम बी एक पढ़ी-लिखी मध्यम परिवार की लड़की थी। बी.ए. पास करते ही मां-बाप ने शादी तय कर दी। पति डाक्टर था। ससुराल में सभी से मान-प्यार मिला। चार साल गुजर गये। एक दिन उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। स्कूटर दुर्घटना में पति गुजर गये। शबनम बी पर जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया। दो बच्चे थे। दोनों जुड़वां, साल भर के दोनों विक्लांग। इधर पति गुजरा उधर ससुराल वालों ने उसे अभागिन-अशुभ मानना शुरु किया। जेठ ने भी शबनम बी पर बुरी नजर डाली। अब आसरा सिर्फ मायके का ही था, पर मायके से भी साफ झंडी मिल गई। मां-बाप बोले-तू यहां रहेगी तो ससुराल का हिस्सा गवां देगी। वैसे यह तेरा घर है। अकलमंद को इशारा काफ़ी। शबनम की रही-सही आस भी जाती रही। शबनम ने हिम्मत नहीं हारी। उसने एक घर में गवर्नेस की नौकरी कर ली। पैसे जोड़े अपने नाम से जमीन खरीदी। और उस पर दो कमरे का मकान बनाया। साथ ही ससुराल की जायदाद में अपने हिस्से का दावा किया। जेठ ने गुंडे भेजे। उसे डराया-धमकाया, मारा पीटा, पर शबनम बी डरी नहीं। तीन साल बाद फैसला हुआ। शबनम बी के पक्ष में। जेठ हार गया। शबनम बी को अपना हक़ मिला। है न इनका जीवन हमारे लिए एक मिसाल।

रोज़ी की लगन

बचपन से ही रोज़ी गूंगी-बहरी थी। उसका एक हाथ भी एक्सीडेंट में कट गया था। रोज़ी के मां-बाप ने उसे बी.ए. पास कराया। फिर सोचा कोई अच्छा लड़का देख शादी कर दें, पर रोज़ी ने सख्ती से इन्कार कर दिया, उसने सेक्रेटरी का दो साल का कोर्स किया, पर फिर भी टाइपिंग नहीं कर पाती थी। रोज़ी की सहेली से पता चला कि आजकल अस्पताल में नकली अंग लगने की संभावना है। सहेली के साथ रोज़ी अस्पताल गई। वहां उसको लकड़ी का हाथ लगाया गया। अब रोज़ी ने प्रेक्टिस की। दोनों हाथों से आज वह हमारी आपकी तरह काम कर सकती है। उसने शादी न करने का फैसला किया है और अपनी जिंदगी की नए सिरे से शुरुआत करके बहुत खुश है। □

मुट्ठी तानो मांगो हक
रह जाए दुनिया हकबक।